आरती

सीय रघुवर जी की आरती शुभ आरती कीजै–2

दाये लखन सोह सीय बाये, मध्य छटा धनुधारी की,– शुभ–

चंवर डुलावत भरत शत्रुघ्न, पद बंदत हनुमान की–शुभ–

पवन कुमार चरन गहि बैठे, भैया भरत भय हारी की–शुभ–

नारद शेष गणेश बखानत, आरती शंकर पार्वती की – शुभ–

चारि भुजा आयुध सब धारे, आरती श्री नारायणजी की–शुभ–

नंद के नंदन असुर निकंदन, आरती राधा माधव की–शुभ–

दुष्ट निकंदिनी सब दुःख हरणी, आरती दुर्गेमाता की–शुभ–

गावत वेद पुरान अष्टदश, छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस ।

आरती श्री रामायण जी की शुभ आरती कीजै ।

करहि आरती आरत हर के, रघुकुल कमल विपिन दिनकर के

तारण तरण हरण सब दुषण, तुलसी दास प्रभु त्रिभुवन भूषण ।

सुन्दर आरती सियावर की शुभ आरती कीजै ।

सिय रघुवर जी आरती शुभ आरती कीजै ।। सिय–